21 नवम्बर

ब्रह्मानन्दम् परमसुखहम्। ब्रह्म के स्पर्श अनुरूप कोई सुख नहीं और इसका पता साधक को तब चलता है, जब ध्यान से बाहर आने का उसका मन ही नहीं होता। सवाल उठता है क्यों होता है ऐसा? इस असीम अदभुत गहरे सुख के प्रवाह से क्यों वापस, क्यों? इसी में रहना है। इसी में स्थित होना है। यह असीम है, अदभुत है। बाहर आने का मन नहीं होता। बोलने का मन नहीं होता। कुछ नहीं, बस इसी अवस्था में रहने का मन और अभी तो यह केवल सतह (Surface), बाकी की गहराई तो नापना ही कठिन है, उसके विषय पर बताना ही कठिन है। अभी तो केवल मस्तिष्क को एक विचित्र सा अनुभव है और वह इसी में ही बह गया। यह लीला है ईश्वर की। लीला भटकाती और लीला ही मिलाती है। ऐसा क्यों? यह कोई नहीं जान सका। ब्रह्मऋषियों ने भी कहा इसका कोई उत्तर नहीं। क्यों का उत्तर नहीं है। पर सत्य यही है कि ब्रह्मानन्दम् परमसुखहम्।

पहले–पहल मस्तिष्क को अदभुत अनुभव होते हैं जिनमें आनन्द और शान्ति है। उसके उपरान्त केवल इसी प्रकार के अनुभव नहीं, फिर यात्रा है, पर बड़े आनन्द की यात्रा है जिसमें संवेदना है। संवेदना नहीं जाती, क्योंकि कल्याण करना है। इसलिए दूसरे के दुःख को समझना, दूसरे की स्थिति को समझना, उसकी अवस्था को समझना, यह संवेदना है। अध्यात्म का प्रसाद गहराता है जैसे–जैसे मनुष्य की यह संवेदना जागती है। (One shall understand the other person more) दूसरे व्यक्ति को, उसकी परिस्थिति को, उसकी कमी को, उसके अधूरेपन को जब आप समझना आरम्भ करते हो, तो वह संवेदना है। वह नहीं जाएगी। संवेदनहीन व्यक्ति अध्यात्म में प्रगति कर भी गया तो बहुत कठिनाई से करेगा और कर भी गया तो भी संवेदना तो उसमें आएगी ही....।

हठ योग सबसे पहले अपने प्रति संवेदना समाप्त करता है। इसलिए सबसे कठिन है, पर हठयोगी भी उस चरम पर पहुंचने के उपरान्त सबसे पहले अपनी व्याप्ति में संवेदना को अनुभव करता है। सबको समझता है। सब की समझ होना अर्थात् दूसरों की परिस्थिति को, उनकी स्थिति को समझना, उनके अधूरेपन को समझना। वह ऐसी स्थिति में क्यों है? वह ऐसी स्थिति में क्यों है? इसे जब आप गहराई से समझते हो तो यह संवेदना है और उसके लिए आप जो करते हो, वह सेवा है। ब्रह्मऋषि परम अवस्था को प्राप्त हो कर भी संवेदना और सेवा नहीं छोड़ते, उसे त्याग ही नहीं सकते। वह अपने प्रकार से लगे रहते हैं। सारी बात तो मैं नहीं जानता। जो जरा सा मुझे पता है, उसी के आधार पर यह कह रहा हूँ। संवेदना और सेवा ब्रह्मऋषियों में नहीं जाती, रहती है। इसलिए तो हिमालय के नन्दन वन में बैठे हजारों वर्षों से भी पूर्व के ब्रह्मऋषि, जो ब्रह्ममयी हो चुके, आते रहते हैं और कल्याण करते हैं। अब क्या रखा है उनके लिए यहां? क्या पड़ा है? क्या उन्होनें चेला बनाना है? यां उन्होनें हमसे दान–दक्षिण लेनी है? हमसे प्रणाम करवाना है? क्यों आते हैं वह? संवेदना, सेवा हेतु।

ऐसे ब्रह्मऋषि जो अभी हाल के होंगे, जिनकी अवस्था कारण शरीर को प्राप्त हो गई, क्यों बैठे हैं हिमालय में? किसलिए? दिखते तो हैं नहीं। नाम छोड़ दिया, रूप छोड़ दिया। क्यों बैठे हैं? दान लेना है, प्रणाम करवाना है, नहीं। संवेदना और सेवा हेतु। संवेदना और सेवा के लिए यह ब्रह्मऋषि अपने भीतर के ब्रह्मानन्दम् परमसुखहम् से प्रेरित होते हैं।

ब्रह्मानन्दम् परमसुखहम् मस्तिष्क में आरम्भ हो कर यहां हृदय तक सुनाई देता है। परम सुख, गहरा सुख यहां अर्थात् मस्तिष्क में उसकी प्राथमिक (Initial) अनुभूति होती है और जा कर फिर स्थापित कहां होती है? यहां हृदय में। यहीं कुछ होना आरम्भ हो जाता है। उसका एक प्रतिबिम्ब, एक प्रक्षेपण (Projection) यहां हृदय में आता है। होता तो यहां

हृदय में है। वह अपने भीतर के ब्रह्मानन्दम् परमसुखहम् से प्रेरित हो, बिना शरीर, बिना रूप, बिना नाम, बिना किसी प्रशंसा के सेवा मात्र करते हैं। क्यों? क्योंकि उनका भाव जगत उन्हें इसके लिए प्रेरित करता है, बाध्य करता है। ब्रह्मानन्दम् परमसुखहम्।

हम भी उस यात्रा में हैं, हम सभी साधक, हम भी वहीं पहुंचेगे, बिल्कुल पहुंचेगे, हम सभी पहुंचेगे। अपने–अपने समय से, अपनी–अपनी यात्रा से, पर हम सभी उसी अवस्था में पहुंचेंगे। तुम केवल अपनी कमियां मत देखो, अपनी वासना मात्र मत देखो, अपनी लिप्सा, अपना क्रोध, अपना द्वेष, अपना द्वन्द, अपनी चिन्ता, अपना भय, अपना अधूरापन, उसे केवल मत देखो। उस दोगलेपन को मात्र मत देखो। वह तो है और वह प्रकृति में व्याप्त है। अग्नि को धुआं है तो माया का प्रभाव मस्तिष्क पर, विचार रूप में रहेगा, उसे मत देखो, वह है। पर उससे बड़ा सत्य यह है, हम सभी उसी उत्कर्ष पर पहुंचेगे जहां आज ऋषि विद्यमान हैं।

ब्रह्मानन्दम् परमसुखहम्। यह भाव सुनते ही अपने दोष दिखाई देते हैं। दिखाई देते हैं बाबू, चूंकि उन सभी दोषों को अब बाहर जाना है। अगर वह जाने न हों, तो तुम्हें दिखाई ही क्यों दें? हम सभी ऋषि होंगे, तुम भी पहुंचोगे, सभी पहुंचेगे, उस ब्रह्मानन्द में, उन ब्रह्मऋषियों में।

सुन कर तो एकदम से संशय आता है कि मेरे में तो केवल अभी दोष हैं। वह तो सत्य है, नकारा नहीं गया, पर उसके प्रति बोध इसीलिए है, क्योंकि तुमने वहां परिपक्वता की ओर जाना है। वीज़ा की मोहर लग गई। जाओगे और तैयारी चल रही है, पर टिकट के पैसे अभी नहीं हैं। वीज़ा लगवा लिया, टिकट के पैसे नहीं। पैसे भी हो जाएंगे।

क्या ब्रह्मऋषि की बात पर विश्वास करते हो? मेरे ब्रह्मऋषि का वाक्य मैनें पहले भी ध्यान सत्र में सुनाया था, कि आप कहते हो सतयुग आ जाएगा। कैसे आ जाएगा? आस–पास देखो। मन ही नहीं होता कि ऐसा सोचने का प्रयास करें। आप यह बातें इतनी बड़ी–बड़ी बोलते हो।

मेरे ब्रह्मऋषि कहा करते थे, देख, मुर्गा सुबह बांग देता है, सूर्य के आगमन से पूर्व वह घोषणा करता है। मुर्गे के बस में सूर्य को लाना है क्या? नहीं। सूर्य के आगमन से पूर्व के आभास में वह इतने आत्मविश्वास से भर जाता है कि बांग दिए बिना नहीं रुकता, जबकि अभी अन्धेरा ही होता है। उजाला आया नहीं, अन्धेरे में भी मुर्गा बांग दे कर पूरे आत्मविश्वास के साथ घोषणा करता है कि सूर्य आने वाला है। तो मेरे ब्रह्मऋषि कहते थे कि मैं बड़ा मुर्गा, तू छोटा मुर्गा। बड़े मुर्गे की बांग सुन और छोटा मुर्गा बन कर तू भी बांग दे। हम सभी छोटे मुर्गे हैं। इसलिए उस अवस्था को प्राप्त करना पूर्ण रूप से तो अभी हमारे हाथ में नहीं है, क्योंकि और भी शक्तियां जुड़ी हैं, पर यह सत्य है कि ऐसा होगा। यह पूर्ण आत्मविश्वास है। ब्रह्मानन्दम् परमसुखहम् की स्थायी अवस्था आएगी। हमारा प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में नित्य प्रति उठ कर साधना करना और सूक्ष्म जगत के ब्रह्मऋषियों की कृपा–अनुकम्पा का पात्र बनना..... हमारा कल्याण निश्चित कराएगा। उनके कल्याण के हम बड़भागी बनेंगे ही..... यह निश्चित है। हमारा तप सार्थक होगा।